बहमनी साम्राज्य

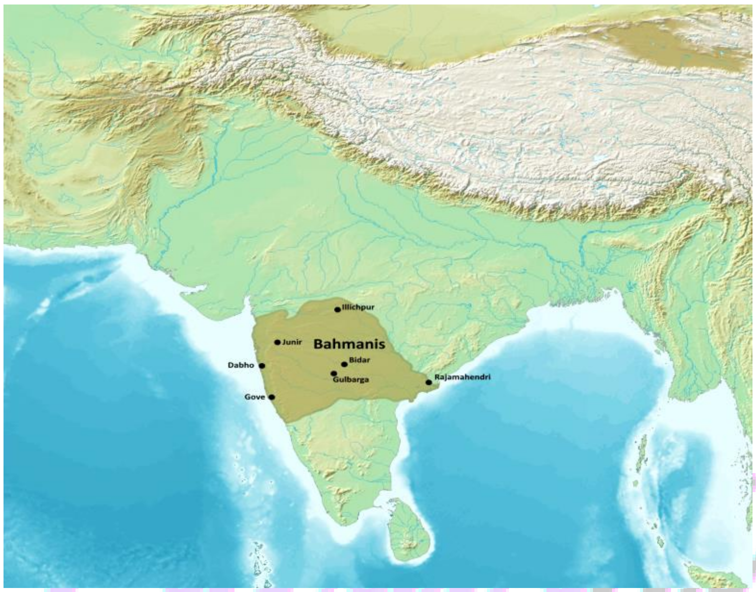

(1347 से 1527)-

वर्ष 1347 में (मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में) 100 गांव के ऊपर विदेशी जिन्हें अमीरे सादा कहा जाता था इन्होंने "इस्माइल मख" के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और दौलताबाद में नियंत्रण स्थापित कर दिया इस्माइल मख ने अपनी वृद्धावस्था के कारण नौजवान हसन गंगू को गद्दी पर बैठने के लिए चुना हसन गंगू 11 अगस्त 1347 के दिन "अब्दुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमन शाह के नाम से गद्दी पर बैठा तथा गुलबर्गा को राजधानी बनाया

1.अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (1347- 1358) -

अन्य नाम - जफर खान इन्होंने स्वयं को फारस के स्पंदिशाह के पुत्र बेईमान शाह का वंशज बताया तथा द्वितीय सिकंदर की उपाधि धारण की

अलाउद्दीन हसन बहमन शाह भारत का पहला शासक था जिसने "हिंदुओं से जजिया कर ना लेने का आदेश दिया" था यद्यपि इसने अपने पद की स्वीकृति मिश्र के खलीफा से प्राप्त की थी इसने अपने राज्य में सभी प्रकार की कृषि उपज निशुल्क आने दी

2. मोहम्मद शाह प्रथम (1358- 75) -

मोहम्मद शाह प्रथम बहमनी वंश का प्रथम सुल्तान था जिसने बहमनी साम्राज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया जिसमें दौलताबाद ,गुलबर्गा,बरार और बीदर प्रमुख थे मोहम्मद शाह प्रथम के शासनकाल में पेशवा सहित 8 मंत्रियों के परिषद गठित की गई जो नागरिक प्रशासन से संबंधित थी

मोहम्मद शाह प्रथम के शासनकाल में ही पहली बार बारूद का प्रयोग किया गया तथा इसी के शासनकाल में विजयनगर के शासक बुक्का प्रथम के साथ कृष्ण और तुंगभद्रा नदियों के मध्य रायचूर के दो आव के लिए संघर्ष हुआ लेकिन इसका कोई सार्थक परिणाम नहीं निकला

मोहम्मद शाह प्रथम ने वारंगल के शासक को पराजित किया और गोलकुंडा के किले पर लटका दिया

©Parikshagk

3.मोहम्मद शाह द्वितीय - (इनके कोई विशेष कार्य नहीं है)

4. ताजुद्दीन फिरोज शाह (1397 - 1422)-

ताजुद्दीन फिरोज शाह ने महाराष्ट्र में "भीमा नदी" के किनारे "*फिरोजाबाद*" नामक नगर बसाया और इस नगर में देश विदेश से विद्वानों को बसने के लिए प्रेरित किया

इसने विजयनगर के शासक "देव राय" प्रथम को पराजित किया जिसके कारण देवराय प्रथम ने अपनी पुत्री का विवाह ताजुद्दीन फिरोज से किया किंतु अगले युद्ध में यह देवराय प्रथम ने ताजुद्दीन फिरोज को पराजित किया इस पराजय से नाराज ताजुद्दीन फिरोज का भाई सहाबुद्दीन अहमद शाह ने ताजुद्दीन फिरोजपुर को गद्दी से उतार दिया और स्वयं शासक बन गया

5. सिहाबुद्दीन अहमद शाह (1422 - 36)-

गद्दी पर बैठते ही इसने विजयनगर पर आक्रमण किया व 20 हजार लोगों की हत्या कर दी
इसने अपनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर परिवर्तन कर दी और बीदर का नाम परिवर्तन करके मोहम्मदाबाद कर दिया
सहाबुद्दीन अहमद शाह का शासन काल धर्मनिष्ठा व न्याय के लिए प्रसिद्ध था इसलिए बहमनी वंश के इतिहास में इसे अहमद शाह बली या संत अहमद के नाम से जाना जाता है

6.अलाउद्दीन अहमद शाह (1436 - 58)-

इसी के शासनकाल में पहली बार महमूद गवा का उल्लेख मिलता है

7. हमायूं (1458 - 61) -

यह बहमन साम्राज्य के इतिहास में सबसे क्रूर और बिलासी शासक था इसलिए इसे "दक्कन का नीरो" कहा जाता है इसी के शासनकाल में मोहम्मद गवा वजीर बना

8.निजामुद्दीन अहमद शाह (1461- 63) -

यह हुमायूं का 8 वर्षीय पुत्र था इसके अल्पायु होने के कारण शासन चलाने के लिए एक परिषद की स्थापना की गई इस परिषद में महमूद गवा और निजामुद्दीन अहमद शाह माता नरगिस बेगम तथा ख्वाजा के जहां तुर्क शामिल थे

9. मोहम्मद शाह तृतीय (1463- 82) -

इसके शासनकाल में बहमनी साम्राज्य की सीमाएं सीमाओं का सर्वाधिक विस्तार हुआ और साम्राज्य बढ़कर आठ प्रांतों में बढ़ गया इस साम्राज्य विस्तार में मुख्य योगदान मोहम्मद गवा का था

Indianhistory
ALL ABOUT HISTORY

©Parikshagk

महमूद गवा :- यह एक अफ़्रीकी या विदेशी था जिसे इतिहास में "ख्वाजा जहां" के नाम से भी जाना जाता है महमूद गवा ने बीदर में एक विशाल मदरसा तथा पुस्तकालय का निर्माण करवाया

इसने पश्चिमी तट पर संगमेश्वर और खेलना में जहाज के लुटेरों का दमन किया महमूद गवा ने ईरान,इराक ,मिश्र और तुर्की के शासको से पत्र व्यवहार किया इसने जागीरदारों को जागीर की आय के अनुपात में सेना रखना अनिवार्य किया

इसके उत्कर्ष को देखकर दक्कनीयों को इससे ईर्ष्या होने लगी और उन्होंने षड्यंत्र रचा और मोहम्मद गबा को मृत्युदंड दिलवा दिया बाद में पश्चाताप से सुल्तान की भी मृत्यु हो गई मृत्यु के बाद बहमनी साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया

तथा प्रांत भी धीरे-धीरे अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करने लगे बहमनी वंश का अंतिम शासक कलीमुलला था कालीमुल्ला को उसी के वजीर अलीबरीद ने 1527 में बीदर की गद्दी से हटकर बारिदशाह वंश की स्थापना की

बहमनी साम्राज्य टूटकर कर पांच स्वतंत्र रियासतों में वट गया जोनिम्न है

बीजापुर, अहमदनगर, बरार,गोलकुंडा और बीदर

इतिहास संबंधित अन्य टॉपिक की पीडीएफ के लिए https://indianhistorygk.in वेबसाइट को विजिट करें

NOTE:-